X 3·1

आरोग्य सदन पत्रिका

Shree Kalyan Arogya Sadan

(T.B. Hospital and Medical Research Centre)
Bajajgram-Sanwali - 332 021 (SIKAR) Rajasthan
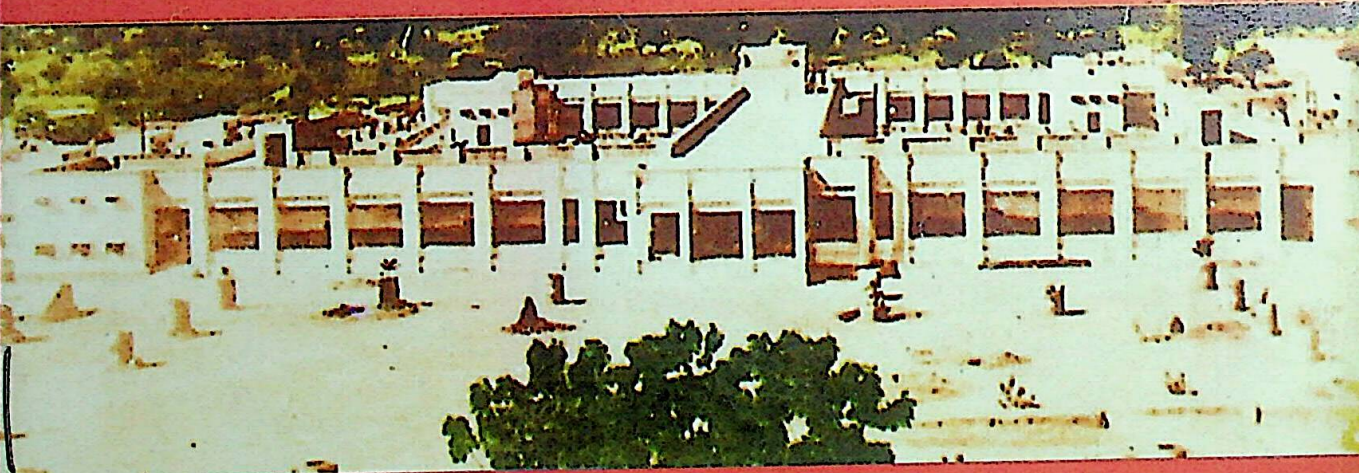
जन-स्वास्थ्य एवं लोक-कल्याण को समर्पित संस्थान का मासिक प्रकाशन

वर्ष : 20 अंक 10
माह – नवम्बर, 2005

श्री कल्याण आरोग्य सदन बजाजग्राम, सांवली
सीकर-332 021 (राजस्थान)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री कल्याण आरोग्य सदन

(क्षय चिकित्सालय एवं आयुर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्र)

बजाज ग्राम सांवली, सीकर (राज.) फोन : 01572-270460

संचालक मण्डल के पदाधिकारी

अध्यक्ष	::	श्री लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, कोलकाता/वृन्दावन
उपाध्यक्ष	::	श्री मदनलाल डालमिया, मुम्बई
मंत्री	::	श्री सांवरमल मोर, सीकर
संयुक्त मंत्री	::	श्री दामोदर प्रसाद शर्मा, सांवली (सीकर)
संयुक्त मंत्री	::	श्री प्रेमसुख अग्रवाल, सीकर
कोषाध्यक्ष	::	श्री देवकीनन्दन बूबना, मुम्बई

सदस्य

- ❖ श्री आनन्दप्रकाश गोयनका, कोलकाता
- ❖ श्री काशी मुरारका, मुम्बई
- ❖ श्री कैलाश बगडिया, कोलकाता
- ❖ श्री द्वारका प्रसाद अग्रवाल, मुम्बई
- ❖ श्री डी.आर. मेहता, जयपुर
- ❖ श्री नथमल भुवालका, कोलकाता
- ❖ श्री बैजनाथ शोभासरिया, सीकर
- ❖ श्री मामराज अग्रवाल, मुम्बई
- ❖ श्री युगलकिशोर शर्मा, जयपुर
- ❖ श्री रामनिवास धूत, मुम्बई
- ❖ श्री सज्जनकुमार भजनका, कोलकाता
- ❖ श्री सांवरमल शर्मा, लक्ष्मणगढ़ (सीकर)
- ❖ श्री सीताराम मित्तल, सांवली (सीकर)
- ❖ श्री सोमनाथ त्रिहन, सीकर

सहवृत्त सदस्य

❖ श्री रामगोपाल दूजोदवाला, मुम्बई ❖ श्री सूरजमल जालान, कोलकाता ❖ श्री ओमप्रकाश जालान, मुम्बई

पता -पदाधिकारी

लक्ष्मीनारायण अग्रवाल
अध्यक्ष
137, कॉटन स्ट्रीट, कोलकाता-700 007
फोन : 033-23202392 (नि.)
मानव सेवाश्रम संघ
आर.के. मिशन, चिकित्सालय के सामने, मथुरा रोड़,
वृन्दावन फोन :0565-2443181

देवकीनन्दन बूबना
कोषाध्यक्ष
46/2 भोईवाड़ा, 3/4 माला
भूलेश्वर, मुम्बई -400002
फोन : 022-22421288, 22425993
एम. जे. मार्केट
फोन : 022-22013053,
(नि.) 22041599, 22044571

कोलकाता कार्यालय :
श्री बसन्तकुमार गिड़िया
द्वारा श्री नन्दलालजी टांटिया
1/2 ओल्ड कोर्ट हाऊस कॉर्नर, द्वितीय तल्ला
कोलकाता फोन : 033-23202392

सांवरमल मोर
मंत्री
आनन्द नगर, सीकर
फोन : 01572-252761(नि.), 270879(का.)

दामोदर प्रसाद शर्मा
संयुक्त मंत्री
बजाज ग्राम, सांवली (सीकर)
फोन : 01572-270952(नि.), 270460(का.)

प्रेमसुख अग्रवाल
संयुक्त मंत्री
आनन्द नगर, सीकर
फोन : 01572-250991(दु.), 270342(नि.)

संपादक मंडल
दामोदर प्रसाद शर्मा, सांवली
सांवरमल शर्मा, लक्ष्मणगढ़.
डॉ. के. सी. शर्मा, सीकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चिकित्सा सेवायें

नाम चिकित्सक	पद	सेवायें उपलब्ध
1. डॉ. जयप्रकाश गोयल एम.बी.बी.एस.,एम.एन.सी.सी.पी.	मेडिकल सुपरिन्टेंडेंट दूरभाष : 250444 (नि.)	प्रत्येक कार्य दिवस
2. डॉ. के.सी. जैन एम.बी.बी.एस.,डी.टी.सी.डी.	सीनियर मेडीकल ऑफिसर दूरभाष : 250242 (नि.)	प्रत्येक कार्य दिवस
3. डॉ. एम.पी. जैन एम.एस. (सर्जरी)	सीनियर सर्जन दूरभाष : 250249 (नि.)	प्रत्येक कार्य दिवस
4. डॉ. कमलेश जगाति एम.डी. चेस्ट एण्ड रेसपैरेट्री डिजीज	सीनियर मेडिकल ऑफिसर मोबाइल : 9352811747	प्रत्येक कार्य दिवस
5. डॉ. श्रीमती अनुराधा गोयल एम.बी.बी.एस., एम.एन.सी.सी.पी.	मेडिकल ऑफिसर मोबाइल : 9414204686	प्रत्येक कार्य दिवस
6. डॉ. शशिधर झा डी. एम. एस. (कोलकाता)	होमियोपेथी चिकित्सक तापड़िया बगीची, सीकर	प्रत्येक कार्य दिवस
7. डॉ. देवेन्द्र सिंह बी. एच. एम. एस.	होमियोपेथी चिकित्सक तापड़िया बगीची, सीकर	प्रत्येक कार्य दिवस
8. वैद्या श्रीमती सीता शर्मा आयुर्वेद रत्न	आयुर्वेद चिकित्सक प्रा. चिकित्सा केन्द्र हर्ष	प्रत्येक कार्य दिवस

शल्य चिकित्सा सेवायें

नाम चिकित्सक	पद	सेवायें उपलब्ध
1. डॉ. जी.एल. राठी एम.एस. FICS, FAIS, FICG	मानद सीनियर सर्जन दूरभाष : 250168	प्रत्येक माह का दूसरा शनिवार और रविवार
2. डॉ. एस.एल. सोनी एम.एस. FICS, FAIS	मानद सीनियर सर्जन दूरभाष : 252457	प्रत्येक माह का दूसरा शनिवार और रविवार
3. डॉ. श्रीमती कमला शर्मा एम.एस. (गाइनोकोलोजिस्ट)	मानद सीनियर सर्जन दूरभाष : 270544	प्रत्येक माह का दूसरा शनिवार और रविवार
4. डॉ. श्रीमती सुप्ती खर्रे एम.एस. (सर्जरी)	मानद सर्जन दूरभाष : 9414036511	प्रत्येक माह का दूसरा शनिवार और रविवार
5. डॉ. रामलाल शर्मा एम.डी. (एनेस्थिसिया)	मानद सीनियर एनेस्थिटिस्ट दूरभाष : 270544	प्रत्येक माह का दूसरा शनिवार और रविवार
6. डॉ. आई. आर. दाना एम.डी. (एनेस्थिसिया)	मानद एनेस्थिटिस्ट दूरभाष : 254175	प्रत्येक माह का दूसरा शनिवार और रविवार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री कल्याण आरोग्य सदन, बजाज ग्राम सांवली, सीकर (राज.)

बाह्य विभाग (आउट डोर)

सदन के चिकित्सालय के आउटडोर में माह अक्टूबर 2005 में क्षय एवं अन्य रोगों के 212 नये तथा 639 पुराने कुल 851 रोगी उपचार हेतु आये जिनमें से 455 बीमारों को निःशुल्क दवा वितरित की गई। इस प्रकार प्रतिदिन का औसत 27 रहा।

आन्तरिक विभाग (इन्डोर)

चिकित्सालय के क्षय एवं वक्ष विभाग में भर्ती बीमारों का माह अक्टूबर 2005 का विवरण।

गत माह में भर्ती रहे बीमार	189			
आलोच्य अवधि में प्रवेश हुए बीमार.....	87			
योग बीमार..................................	276			
प्रस्थान हुए बीमारों का विवरण	सुधार सहित	यथावत	मृत्यु	योग
	135	1	4	140
माह के अन्तिम दिन बीमार	136			

भोजन व्यवस्था

सदन के इण्डोर विभाग में भर्ती होकर उपचार करा रहे रोगियों को निःशुल्क शुद्ध देशी घी युक्त पौष्टिक आहार उपलब्ध कराया जा रहा है। भोजन में हरी सब्जियां एवं प्रतिदिन नाश्ता एवं दोनों समय सदन की गौशाला से प्राप्त 700 ग्राम प्रति रोगी प्रति दिन दूध दिया जाता है। माह अक्टूबर 2005 में रोगियों को 11038 डाइटें तथा 3863 किग्रा दूध का वितरण किया गया।

आरोग्य सदन गौशाला

सदन गौशाला में माह अक्टूबर 05 में औसतन 97 गोधन रहे जिनमें 45 गायें हैं उनमें से 23 गायें दुधारू हैं। माह अक्टूबर 05 में कुल 4862 लीटर दूध का उत्पादन हुआ। इस प्रकार औसतन 156.800 लीटर दूध प्रतिदिन प्राप्त हुआ जो सदन में भर्ती बीमारों को दिया गया। इस अवधि में 182 क्विंटल हरे चारे का उत्पादन हुआ।

गौशाला में जैविक खाद (केंचुआ खाद) का भी उत्पादन किया जा रहा है।

मासिक शल्य चिकित्सा शिविर

डॉ. जी.एल. राठी एवं टीम द्वारा प्रारंभ किये गये प्रति माह आयोजित शल्य चिकित्सा शिविर में माह अक्टूबर 2005 में विभिन्न बीमारियों से सम्बन्धित 31 सफल ऑपरेशन किये गये।

प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र, हर्ष

सदन द्वारा हर्ष ग्राम में संचालित प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र में माह अक्टूबर, 05 में 93 पुरुष, 98 महिलायें तथा 14 बच्चे उपचार हेतु आये जिन्हें निःशुल्क दवाइयाँ उपलब्ध करवाई गई। माह में कुल 205 रोगी आये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होमियोपैथिक विभाग

तापड़िया बगीची सीकर में संचालित होमियोपैथी चिकित्सालय में माह अक्टूबर, 05 में 1449 नये एवं 155 पुराने रोगी उपचार हेतु आये। इस तरह कुल 1604 रोगियों को चिकित्सा परामर्श देकर निःशुल्क दवाइयां दी गई। प्रतिदिन का औसत 52 बीमारों का रहा।

सदन द्वारा कोलकाता में संचालित होमियोपैथी चिकित्सालय में माह सितम्बर, 05 में 2452 पुरुष, 1223 महिलाएं तथा 405 बच्चे कुल 4080 रोगियों को निःशुल्क परामर्श एवं दवाइयां उपलब्ध करवाई गई। प्रतिदिन का औसत 136 बीमारों का रहा। इस अवधि में 17 ई.सी.जी. तथा 46 मधुमेह रोगियों की जांच की गई।

लेबोरेट्री विभाग

सदन के चिकित्सालय में लेबोरेट्री विभाग का माह अक्टूबर, 2005 का कार्य विवरण।

क्र. सं.	जांच का प्रकार	आन्तरिक विभाग	बाहय विभाग	योग
1.	हिमोग्लोबिन	12	117	129
2.	टी.डी.एल.सी	13	108	121
3.	ई.एस.आर.	-	69	69
4.	कफ पोजिटिव	08	45	53
5.	कफ नेगिटिव	108	275	383
6.	यूरिन	165	85	250
7.	बी.टी.सी.टी.	02	06	08
8.	ब्लड ग्रुप	-	05	05
9.	एच.आई.वी	-	18	18
10.	अन्य	65	88	153
	योग	373	821	1194

औसत परीक्षण प्रतिदिन 39

एक्स-रे विभाग

सदन के चिकित्सालय में एक्सरे विभाग का अक्टूबर 05 का कार्य विवरण।

क्र. सं.	जांच का प्रकार	आन्तरिक विभाग	बाहय विभाग	योग
1.	निःशुल्क	23	06	29
3.	सःशुल्क	01	255	256
4.	खराब हुई	-	-	-
	योग	24	261	285

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री कल्याण आरोग्य सदन, बजाज ग्राम सांवली, सीकर (राज.)

बीमारों की चिकित्सा सहायतार्थ प्राप्त राशि

राशि (रु.)	नाम दानदाता	पता
30,000.00	श्री ईश्वरप्रसाद टांटिया	टांटियाट्रस्ट 25/27 नेताजी सुभाष रोड़, कोलकाता-1
24,000.00	राय बहादुर विश्वेश्वरलाल मोतीलाल हलवासिया ट्रस्ट	15 इण्डिया एक्सचेंज पैलेस, कोलकाता-1
15,200.00	श्री ओमप्रकाश केजड़ीवाल (स्व. श्रीमती शशि केजड़ीवाल की स्मृति में)	कोलकाता
15,000.00	श्री काशीराम चौधरी	श्री काशीराम एण्ड कम्पनी एटी रोड़, बोकाघाट (आसाम)
15,000.00	श्री शम्भूप्रसाद अग्रवाल	हरिहर चैरीटेबल ट्रस्ट, 8, गणेशचन्द्र एवेन्यू, शाह कोर्ट-II फ्लोर, कोलकाता-13
15,000.00	श्री जुगलकिशोर सिखवाल	मै. राजस्थान गेस्ट हाऊस, 19, झंकरिया स्ट्रीट, कोलकाता-73
15,000.00	श्री मदनलाल पाटोदिया	मदनलाल बृजलाल पाटोदिंया चै. ट्रस्ट, 7, शम्भूनाथ मलिक लेन, कोलकाता-7
1,100.00	श्री अरुण पारीक	पुरोहित ट्रेडिंग क., अनाज मण्डी, सीकर (राज.)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सदन चिकित्सालय में भर्ती बीमारों के

1. श्री नीरज हरिजन निवासी, जयपुर

"इस अस्पताल के इलाज से मुझे नई जिन्दगी मिली है।" यह कहना है श्री नीरज पुत्र राजेन्द्र हरिजन का। 25 वर्षीय श्री राजेन्द्र ने बताया कि वह 2-3 वर्षों से टी. बी. की बीमारी से पीड़ित था और जयपुर में सरकारी तथा निजी अस्पतालों में 15-20 हजार रुपये व्यय करने के उपरान्त भी जब ठीक नहीं हुआ तब अचरोल के एक रिश्तेदार, जो यहाँ से ठीक होकर गया था, के कहने से यहाँ दिनांक 13.9.2005 को वार्ड नं. 17 में भर्ती हुआ। यहाँ पर मुझ से कोई चार्जेज नहीं लिये गये। यहाँ सभी सुविधायें यथा दवाइयाँ, भोजन, नाश्ता दोनों समय दूध आदि मुफ्त में उपलब्ध करवाई जाती हैं। यहाँ के वातावरण, उपचार तथा आहार आदि के कारण आज दिनांक 10.11.05 को मैं जब ठीक होकर जा रहा हूँ तब मेरा वजन 49 कि. ग्रा. से बढ़कर 70 कि. ग्रा. हो गया है जो 2 माह की अवधि में एक उल्लेखनीय उपलब्धि है।

2. श्री कन्हैयालाल निवासी लाडपुरा (सवाईमाधोपुर)

दिनांक 29.9.05 से सदन के वार्ड नं. 14 में भर्ती 28 वर्षीय श्री कन्हैयालाल ने बताया कि उसने कई स्थानों पर ईलाज कराया परन्तु लाभ नहीं हुआ। सरकारी अस्पताल सवाईमाधोपुर में भी 9 माह तक ईलाज कराया परन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। फिर मेरे दोस्त घनश्याम ने जो कि सांवली में ईलाज करवाकर और ठीक होकर गया था उसने मुझे सांवली जाकर ईलाज कराने की सलाह दी। 2 माह से यहाँ भर्ती हूँ। यहाँ के ईलाज से मुझे पूरी संतुष्टि है। खाना, नास्ता, दूध, दवाई सभी कुछ बिना पैसे मिल रहा है। यहाँ भोजन तो घर से भी अच्छा मिल रहा है। मुझे ऐसा नहीं लगता कि मैं कही परदेश में हूँ। घर जैसा ही माहौल है यहाँ। मैं पहले से काफी स्वस्थ हूँ।

3. श्रीमती तुलसी देवी निवासी मंडोली (डाबला, नीमकाथाना)

23 वर्षीय श्रीमती तुलसी देवी ने बताया कि उसने नीमकाथाना के सरकारी अस्पताल तथा अन्य कई स्थानों के निजी चिकित्सकों से ईलाज करवा चुकने पर जब ठीक नहीं हुई और हजारों रुपये बर्बाद कर दिये तब एक परिचित के कहने से यहाँ दिनांक 4.9.05 को भर्ती हुई। यहाँ मुझे सभी सुविधायें जैसे- भोजन, नाश्ता, दोनो समय दूध, दवाइयाँ आदि मुफ्त उपलब्ध हो रही हैं और 2 माह के इलाज से ही मैं पूर्ण रूपेण स्वस्थ महसूस करने लगी हूँ। यहाँ के इलाज व व्यवस्था से मैं पूरी तरह सन्तुष्ट हूँ।

4. श्री गिरधारी जाट निवासी जाजोद (सीकर)

कई जगह दिखाने पर भी सही बीमारी का पता नहीं चला तब सरकारी अस्पताल जाजोद के कम्पाउण्डर ने मुझे इस अस्पताल में जांच करवाने की सलाह दी। यह कहना है दिनांक 1.10.05 से वार्ड नं. 14 में भर्ती श्री गिरधारी का। उसने बताया कि यहाँ की जांच से जब टी.बी. का पता चला और भर्ती होने की सलाह दी तो मैं भर्ती हो गया। मुझे यहाँ कोई खर्चा नहीं करना पड़ता है। अब मैं पचास प्रतिशत स्वस्थ महसूस करता हूँ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छाती में जानलेवा मवाद

-डॉ. के.के. पाण्डेय

फेफड़ें में या फेफड़े के चारों ओर छाती के अंदर मवाद यानी पस का जमा हो जाना कोई आश्चर्यजनक घटना नहीं है। अपने भारत में स्वास्थ्य सेवाएं इतनी खस्ताहाल है कि हजारों की संख्या में गरीब व मध्यवर्गीय लोग छाती के अन्दर मवाद लेकर घूम रहे हैं। न ही अपनी भोली भाली जनता इस स्थिति को लेकर जागरूक है और न ही चिकित्सक समुदाय इस बीमारी के प्रति संजीदा है। छाती में मवाद इकट्ठा है पर पीड़ित व्यक्ति को यह नहीं मालूम कि कहां जाएं, न ही कोई सही सलाह देने वाला मिलता है। इन सबका परिणाम यह होता है कि एक तरफ इस बीमारी की अनदेखी हो जाती है, तो दूसरी तरफ गलत इलाज शुरू हो जाने की संभावना बढ़ जाती है। अंत में मरीज ही भुक्तभोगी बन जाता है और या तो फेफड़ा गंवा बैठता है या फिर अपनी जान देकर कीमत चुकाता है।

छाती में मवाद का जमाव है क्या?

छाती की दीवार व फेफड़े के बीच खाली जगह होती है। सांस लेते वक्त जब फेफड़ा फूलता है, तो यह खाली जगह भर जाती है। इस खाली जगह को मेडिकल भाषा में 'प्ल्यूरल स्पेस' कहते है। जब किन्हीं कारणों से इस खाली जगह में मवाद यानी पस भर जाता है, तो इस दशा को मेडिकल भाषा में एम्पायमा थोरेसिस कहते हैं। एम्पायमा थोरेसिस का साधारण मतलब यह है कि छाती के अंदर फेफड़े के चारों ओर मवाद का जमाव। ऐसी स्थिति उत्पन्न होने पर तुरंत किसी जनरल सर्जन के बजाय किसी अनुभवी थोरेसिस सर्जन से संपर्क करें और उसकी निगरानी में इलाज शुरू करें।

छाती के अंदर मवाद का कारण

फेफड़े या उसके चारों ओर मवाद जमा होने का सबसे बड़ा कारण न्यूमोनिया का इन्फेक्शन है, जिसमें फेफड़े के चारों ओर पसनुमा पानी इकट्ठा हो जाता है। अगर इन्फेक्शन पर समुचित नियंत्रण नहीं किया गया, तो यह खाली जगह में इकट्ठा पानी पूर्ण रूप से मवाद में परिवर्तित हो जाता है।

दूसरा मुख्य कारण फेफड़े के अन्दर इकट्ठा हुआ पस दबाव के कारण फेफड़े को फाड़ कर बाहर निकल कर फेफड़े के चारों ओर इकट्ठा हो जाता है। कभी-कभी फेफड़े के अन्दर नली डालने पर भी मवाद बाहर निकल कर छाती के अन्दर खाली जगह में इकट्ठा हो जाता है।

तीसरा कारण फेफड़े की ट्यूबरक्युलोसिस का इन्फेक्शन है। इस बीमारी में फेफड़े के चारों ओर शुरूआत में पीला पानी इकट्ठा हो जाता है, जिसमें अगर बैक्टीरिया का बाहर से आक्रमण हुआ तो यह पीला पानी मवाद में परिवर्तित हो जाता है। इस टी.बी. के पीले पानी को सूई द्वारा बार-बार निकलवाने से भी यह मवाद बन जाता है। अगर टी.बी. के पीले पानी की मात्रा 300 मि.ली. से अधिक है और उसे छाती में ऐसा ही छोड़ दिया जाए, तो भी मवाद में बदल जाने की संभावना बढ़ जाती है। इसलिए याद रखें फेफड़े के टी.बी. के इन्फेक्शन में अगर छाती में पीले पानी की मात्रा 400 या 500 मि.ली से अधिक है, तो तुरन्त किसी थोरेसिक सर्जन से छाती में ट्यूब डलवाकर पीले पानी को निकलवा दें और साथ-साथ टी.बी. का इलाज चलाते रहे।

अपने भारत में फेफड़े के चारों ओर मवाद जमा हो जाने का एक और प्रमुख कारण छाती की चोट है। सड़क दुर्घटना में पसली का फ्रैक्चर अक्सर हो जाता है और फेफड़ा जख्मी हो जाता है, जिसकी वजह से फेफड़े के चारों ओर खून का जमाव हो जाता है। अगर यह छाती में इकट्ठा हुआ खून नली द्वारा निकाला नहीं गया, तो इसमें इन्फेक्शन होने की संभावना बढ़ जाती हैं और मवाद में परिवर्तित होने में देर नहीं लगती।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छाती के अन्दर मवाद जमा होने के कई और कारण भी है, जैसे छाती के अन्दर स्थित खाने की नली (इसोफैगस) की चोट या कैंसर की वजह से नली का फट जाना, रीढ़ की हड्डी का इन्फेक्शन एवं फेफड़े के ऑपरेशन के बाद ब्रानकोप्ल्यूरल फिश्च्युला की स्थिति उत्पन्न हो जाना।

अपने देश में दूसरे अन्य देशों की तुलना में छाती में मवाद भर जाने का एक और महत्त्वपूर्ण कारण जिगर का फोड़ा (लिवर ऐब्सेस) है। हमारे देश में अक्सर लोग पुरानी पेचिस के शिकार होते रहते है। इस तरह की पुरानी पेचिस वाली स्थिति में लिवर में इन्फेक्शन के साथ-साथ मवाद इकट्ठा हो जाता है। अगर समय रहते इसका इलाज नहीं किया गया, तो यह जिगर का फोड़ा आकार में बढ़ता चला जाता है और फट जाता है। अक्सर 'लिवर ऐब्सेस' ऊपर की ओर फटता है, जिससे छाती के अन्दर मवाद का जमाव हो जाता है। यह बड़ी भयावह स्थिति होती है। समय रहते अगर किसी थोरेसिक सर्जन से इसका इलाज नहीं करवाया गया तो जान भी जा सकती है।

हमारे देश में हर साल करीब दो लाख नए मरीज इस बीमारी के शिकार होते हैं। इनमें से करीब अस्सी हजार लोग समुचित इलाज के अभाव में जान गवां देते है, जो बच जाते हैं उनमें से साठ प्रतिशत लोग इस बीमारी के कॉम्प्लीकेशन से पीड़ित रहते है। वृद्धावस्था में इस बीमारी से मरने वालों की संख्या करीब 75 फीसदी रहती है।

शेष अगले अंक में...

पौष्टिक सेब

एक गुणकारी फल

एक सेव नित्य खाने से डाक्टर की आवश्यकता नहीं पड़ती। An apple a day keeps the Doctor away भूख लगने पर सेब खाना अच्छा लगता है। सेब भूखे पेट खाना भी अच्छा है। यह गर्मी खुश्की दूर करता है। इसका मुरब्बा हृदय, रक्त व मस्तिष्क की कमजोरी हटाता है। नित्य भूखे पेट सेब खाने के बाद दूध पीने से त्वचा का रंग निखर जाता है। चेहरे पर लाली और यौन सम्बन्धी कमजोरियां दूर होकर जीवन में स्फूर्ति आ जाती है।

मानसिक तनाव, चर्मरोग, गठिया, संधिशोथ श्वास प्रणाली के रोगों में सेब नित्य खाने से लाभ होता है।

खाना खाने के बाद सेब खाने से दांत व मसूड़े ठीक हो जाते हैं और खराब नहीं होते।

जुकाम से पीड़ित व्यक्तियों में दुर्बल मस्तिष्क के कारण भी जुकाम बना रहता है व दवाओं से लाभ नहीं होता। ऐसे लोगों को भोजन से पहले छिलके सहित सेब खाना चाहिए। उच्च रक्त चाप (High Bloodpressure) होने पर दो सेब नित्य खाने से लाभ होता है।

स्मरण शक्ति वर्धक– जिन लोगों को याद नहीं रहता उन्हें सेब खानी चाहिए।

अधिक प्यास– सेब का रस पानी में मिलाकर पीने से प्यास कम लगती है। वायु विकार में सेब लाभदायक नहीं होता।

पथरी– गुर्दे और मूत्राशय में पथरियां बनती रहती हैं। ऑपरेशन के पश्चात् भी प्रायः पथरी बन जाती है। सेब का रस पीते रहने से पथरी बनना बन्द हो जाती है तथा बनी हुई पथरी घिस-घिसकर मूत्र द्वारा बाहर आ जाती है। यह वृक्कों (ज्ञपकदमल) को शुद्ध करता है। गुर्दे का दर्द दूर करता है।

बहुमूत्र– सेब खाने से बार-बार मूत्र आना कम हो जाता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सिरदर्द - सेब पर नमक लगाकर 20-25 दिन खाने से सिर दर्द में लाभ होता है। सेब खाने के पश्चात् गर्म पानी या दूध पीयें।

अनिद्रा (Insomnia) - अनिद्रा होने पर सेब का मुरब्बा खाने से नींद आने लगती है। सेब खाकर सोना भी नींद लाने में सहायक है।

बच्चों के दस्त- जब बच्चों को दूध नहीं पचता व दूध पीते ही दस्त आने को होती है तो उनका दूध बन्द कर उन्हें सेब का रस थोड़ी-थोड़ी देर बार दें। इससे उन्हें आराम मिलेगा। बड़े लोगों को भी मरोड़ दस्तों में सेब का रस लाभदायक है। यह खून के दस्तों को भी बन्द करता हैं

गैस- सेब का रस पाचन अंगों पर एक पतली से तह. चढ़ा देता है जिससे वे संक्रमण व बदबू से बचे रहते हैं। वायु उत्पन्न होकर रुक जाता है। सेब का रस पीने के बाद गर्म पानी पीना चाहिए।

कब्ज- भूखे पेट सेब खाने से कब्ज दूर होती है।

कृमि रोग में दो सेब रात को करीब सात दिन निरंतर खाने से कृमि मरकर मल के साथ बाहर निकल आते हैं। सेब खाने के बाद पानी न पीएं।

मस्से- खट्टे सेब का रस मस्सों पर लगाने से मस्सें छोटे-छोटे टुकड़े होकर गिर जाते हैं।

शराब की आदत- सेब का रस बार-बार पीने से व अच्छी तरह पका हुआ सेब तीन बार खाने से शराब की आदत छूट जाती है। नशे के समय सेब खाने से नशा उतर जाता है।

भूख न लगना- खट्टे सेब का रस एक गिलास मिश्री मिलाकर कुछ दिन पीने से भूख लगने लगेगी। खट्टे सेब के रस से आटा गूंथ कर रोटी बनाकर खाने से भी लाभ होगा।

मलेरिया ज्वर में सेब खाने से ज्वर जल्दी ठीक हो जाता है। ज्वर चढ़ने से पूर्व या ज्वर उतरने के बाद ही सेब खाएं।

नोट : गला बैठने पर सेब न खाएं। गाने वाले भी सेब न खाएं।

जीवन दर्शन

उतार-चढ़ाव, जय-पराजय जीवन का हिस्सा होते हैं। ऐसे समय में भी संतुलन बनाकर चलने वाले सुखी रहते हैं। धीरज़ खो देने वाले दुःख पाते हैं। इस संदर्भ में एक कथा है। अरब़ देश की बात है। एक राजा था। उसके बड़े ठाठ-बाट थे। उसके पास किसी चीज की कमी नहीं थी। एक बार वह लड़ाई पर गया। उसके पास खाने-पीने का इतना सामान था कि उसे लादने के लिए तीन सौ ऊंटों की जरूरत पड़ी। दुर्भाग्य से घमासान लड़ाई में वह दुश्मन से हार गया और बंदी बना लिया गया। नजरबंद रहने की अवस्था में एक दिन उसके पास उसका रसोइया खड़ा था। राजा ने कहा- 'मुझे भूख लगी है। कुछ खाने को तैयार कर दो।'

रसोइये के पास मांस का एक टुकड़ा बचा था। उसने उसे देगची में डालकर उबलने के लिए रख दिया। कहीं कुछ साग-सब्जी मिल जाए तो अच्छा होगा, यही सोचकर वह उसकी खोज में निकल पड़ा। इतने में एक कुत्ता वहां आया। मांस की गंध से उसने अपना मुंह देगची में डाल दिया। संयोग से देगची में उसका मुंह अटक गया। उसने मुंह निकालने की बहुत कोशिश की, जब न निकला तो देगची को लेकर ही वह वहां से भागा। राजा ने देखा तो जोर से हंस पड़ा। पास में एक संतरी खड़ा था। उसने राजा की हंसी सुनी तो उसे बड़ा अचरज हुआ। उसने कहा- आप इतनी मुसीबत में हैं, तब भी हंस रहे हैं, क्या बात है?

राजा ने जवाब दिया- 'मुझे यह सोचकर हंसी आ रही है कि कल तक मेरे रसोई के सामान को ले जाने के लिए 300 ऊंटों की जरूरत होती थी, अब उसके लिए एक कुत्ता ही काफी है। किसी ने ठीक ही कहा है कि सुख में तो सभी खुश रहते हैं, लेकिन साहसी व्यक्ति वहीं है जो मुसीबत में भी हंसने का साहस कर सके।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पेप्टिक अल्सर के उपचार में क्रांति

◆ **पेप्टिक अल्सर क्या है?**

आमाशय में छाले अथवा घाव से पेट में लगातार दर्द रहने लगता है। पाचक अम्लों के स्राव में बाधा पहुंचती है और मरीज ठीक से खा पी नहीं पाता या फिर अपच का शिकार हो जाता है। समय पर उपचार नहीं मिलने से घाव गहराता है और कई बार आंतों में रूकावट तक पैदा हो जाती है। कई बार यह अल्सर कैंसर तक में तब्दील हो जाता है।

कभी लाइलाज समझे जाने वाले पेट के घावों (पेप्टिक अल्सर) को अब साधारण एन्टीबायोटिक दवाइयों का सेवन कर जड़ से खत्म करना संभव है। यही नहीं, गम्भीर किस्म के अल्सर के प्रकरणों में सर्जरी की जरूरत भी अब 60 से घट कर 10 फीसदी रह गई है। यह सब उस शोध से संभव हुआ है जिससे वैज्ञानिकों ने यह साबित कर दिखाया कि अल्सर के पीछे तनाव अथवा खानपान के विकार के बजाए 'हैलिकोबेक्टीरियल पॉयलेरी' नामक जीवाणु जिम्मेदार है।

इस खोज के बाद पेप्टिक अल्सर की 'हरी' 'वरी' और 'करी' थ्योरी खत्म हो गई है। पहले माना जाता था कि हरी अर्थात जल्दबाजी, वरी मतलब चिन्ता और करी यानी सब्जी या खानपान में से कोई भी कारण अलसर के प्रति जिम्मेदार होता है। हाल ही चिकित्सा के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार पाने वाले आस्ट्रेलियाई वैज्ञानिकों की खोज ने पेप्टिक अल्सर के उपचार में क्रांति ला दी है। यूनिवर्सिटी ऑफ वेस्टर्न आस्ट्रेलिया में इस विषय पर शोध कर रहे वैज्ञानिक बैरी मार्शल और रॉबिन वारेन ने वैसे तो अस्सी के दशक में ही पेप्टिक अल्सर के लिए इस जीवाणु को जिम्मेदार बता दिया था, लेकिन तब इस बात को चिकित्सा जगत में खास तवज्जों नहीं मिल पाई। बाद में 90 के दशक में कुछ दवा कम्पनियों ने अन्य दवाइयों के साथ एन्टीबॉयोटिक डाल कर 'ट्रिपल डोज रेजीम' बेचनी शुरू कर दी। इससे अल्सर के उपचार में अन्य दवाइयों के साथ एन्टीबायोटिक्स को भी उपयोगी माना जाने लगा।

इन दोनों वैज्ञानिकों को मिले नोबेल पुरस्कार ने इस खोज पर मुहर लगा दी है कि पेप्टिक अल्सर एक जीवाणु के संक्रमण से होता है।

घरेलू उपचार

1. विषैले कीट द्वारा काट लिये जाने पर पुखराज घिसकर लगाइये, तुरंत राहत मिलेगी। यदि राहत न मिले तो समझो कि पुखराज असली नहीं है।
2. पतले दस्त लग रहे हों तो गन्ना चूसें। एक दो दस्त आने के बाद बिल्कुल बन्द हो जावेंगे।
3. खूनी या सूखी बवासीर है तो हरित की (हरड़) का चूर्ण एक-एक चम्मच दो बार छाछ के साथ लें। यदि चूर्ण से पतला दस्त आवे तो आधा-आधा चम्मच कर दें। छः माह तक सेवन करें।
4. किसी-किसी को पेशाब करने के बाद या पहले चिकना द्रव निकलता है। चिन्ता न करें। एक-एक चम्मच त्रिफला चूर्ण जल के साथ प्रातः सांय लें।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रेरक प्रसंग

एक बार मालवीयजी के एक मित्र उन्हें धन के सहयोग की अपेक्षा से एक बड़े व्यापारी के घर ले गये। आवाज देने पर सेठजी ने बैठक का द्वार खोला और दोनों अतिथियों को आदर से बिठाया। उस वक्त शाम हो गयी थी और अँधेरा छाने लगा था। बैठक में बिजली नहीं थी, अतः सेठजी ने अपने छोटे पुत्र को लालटेन जलाने को कहा। पुत्र लालटेन और दियासलाई लेकर आया। उसने माचिस की एक तीली जलायी परंतु वह लालटेन तक आते-आते बुझ गयी। फिर दूसरी जंलायी, वह भी बीच में ही बुझ गयी। जब तीसरी तीली का भी यही हाल हुआ, तब सेठजी लड़के पर नाराज होकर बोले : "तुमने माचिस की तीन तीलियाँ नष्ट कर दीं। कितने लापरवाह हो!"

उन दिनों माचिस की एक डिब्बी दो पैसे में आती थी, जिसमें तीस-चालीस तीलियाँ होती थीं। लड़के को डाँटकर सेठजी भीतर गये, शायद अतिथियों के लिए पानी लेने। उनके अंदर जाने पर मालवीयजी ने अपने मित्र की ओर अर्थपूर्ण दृष्टि से देखा, मानों कह रहे हों कि 'इस सेठ से कुछ पाने की आशा मत करो, क्योंकि यह तो इतना कंजूस है कि माचिस की तीन तीलियों के नष्ट हो जाने पर लड़के को डाँटता है।' संकेत में ही मित्र ने मालवीयजी से सहमति जतायी और दोनों बैठक से बाहर निकले। इतने में सेठजी आ गये। वे चकित होकर बोले :- 'अरे, आप चल क्यों दिये? बैठिये, काम तो बताइये।" दोनों सज्जन पुनः बैठक में बैठ गये।

मालवीयजी के मित्र ने उन्हें हिन्दू विश्वविद्यालय के निर्माण ओर उसके उद्देश्य के बारे में बताया। सेठजी ने कहा : "यह काम तो बड़ा अच्छा है।" इतना कहकर सेठजी ने तुरंत पचीस हजार रुपये (जो आज के दस लाख रुपये से भी अधिक कीमत रखते थे) निकालकर रख दिये। यह देखकर मालवीयजी और उनके मित्र चकित हुए। मालवीय ने सेठजी से कहा : "एक बात पूछूँ? अभी आपने लड़के को उसके द्वारा माचिस की तीन तीलियाँ नष्ट होने की वजह से डाँटा था, जबकि तीलियों का मूल्य नहीं के बराबर है लेकिन हिन्दू विश्वविद्यालय के लिए आपने तुरंत पचीस हजार रुपये दे दिये। इन दोनों व्यवहारों में इतना अंतर क्यों ?

सेठजी हँसकर बोले : "महामना! मेरा सोचना ऐसा है कि व्यर्थ तो माचिस की एक तीली भी नहीं जानी चाहिए। लापरवाही से छोटी-से-छोटी वस्तु को भी नष्ट नहीं करना चाहिए लेकिन किसी शुभ कार्य में हजारों रुपये सहर्ष दे देने चाहिए। दोनों बातें अपनी जगह ठीक हैं। इनमें कोई विरोध नहीं।"

फिजूल में एक पैसा नहीं, सत्कार्य में लाखों सही

एक दहेज ऐसा भी

एक बार मालवीयजी के पास एक धनी सेठ अपनी कन्या के विवाह का निमंत्रण-पत्र देने आये। संयोग से जिस युवक के साथ उनकी कन्या का विवाह होने वाला था, वह मालवीयजी का शिष्य था। मालवीयजी ने सेठजी से कहा : "प्रभु की आप पर कृपा है। सुना है कि आप इस विवाह पर लाखों रुपये खर्च करने वाले हैं। इससे धन प्रदर्शन आदि में व्यर्थ ही चला जायेगा। वह राशि आप हमें ही दहेज में दे दें ताकि इससे हिन्दू विश्वविद्यालय के निर्माण का शेष कार्य पूरा हो सके। लड़के का गुरु होने नाते मैं यह दक्षिणा लोक-मांगल्य के कार्य के लिए आपसे माँग रहा हूँ।" मालवीयजी के इस कथन का उन सेठ पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि उन्होंने विवाह में ढेर सारा धन खर्च करने का अपना विचार बदल दिया। उन्होंने अत्यंत सादगी से न केवल आदर्श विवाह किया अपितु विश्वविद्यालय में अनेक भवन भी बनवा दिये। लोगों ने भी कहा : 'दहेज हो तो ऐसा।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सदन समाचार

लैन्स प्रत्यारोपण शिविर

सदन द्वारा हेल्पेज इण्डिया, सेठ श्री मदनलालजी पालड़ीवाला फाउण्डेशन, नई दिल्ली तथा श्री जयनारायण मोदी, नीमकाथाना के सहयोग से पाटन में दिनांक 19 व 20 अक्टूबर, 05 को विशाल निःशुल्क लैंस प्रत्यारोपण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में नेत्र रोगों से संबंधित 521 बीमारों का पंजीयन किया जाकर उन्हें जयपुर के जाने माने नेत्र विशेषज्ञ डॉक्टर अविनाश पुरोहित एवं उनकी टीम ने निःशुल्क परामर्श दिया तथा उनमें से ऑपरेशन योग्य 151 बीमारों का सफलता पूर्वक ऑपरेशन कर लैंस प्रत्यारोपण किया गया। इन बीमारों को आयोजकों की ओर से निःशुल्क दवाइयाँ भी उपलब्ध करवाई गई। इस अवसर पर 135 बीमारों को मुफ्त चश्मों का भी वितरण किया गया।

शिविर के उद्घाटन अवसर पर पूर्व विधायक नीमकाथाना श्री मोहनलाल मोदी, पूर्व प्रधान श्री कान्ताप्रसाद शर्मा के अलावा युवा विकास परिषद् के अध्यक्ष श्री हरिकिशन व कार्यकर्त्ता बड़ी संख्या में उपस्थित थे। शिविर का समापन समारोह सदन के मंत्री श्री सांवरमल मोर की अध्यक्षता तथा पूर्व सांसद श्री श्रीकिशन जी मोदी के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री सांवरमल मोर ने युवा विकास परिषद् के सदस्यों के सहयोग की मुक्त कंठ से प्रशंसा की और साधुवाद दिया।

सेवाधर्म महान

एक बार एक महात्मा को शास्त्रार्थ हेतु सभा में आमंत्रित किया गया। वे मंच पर पहुंचे। उन्होंने देखा कि एक व्यक्ति के हाथ में दर्द है और वह कराह रहा है। महात्मा जी तुरन्त उस पीड़ित व्यक्ति के पास गए और उसके कष्टों के निवारण का प्रयास करने लगे। उन्हें ऐसा करते देख आलोचकों ने कहना प्रारम्भ किया- महात्माजी। आप तो यहां शास्त्रार्थ करने आए थे। उससे हटकर सेवा करने लगे। लगता है आप शास्त्राार्थ से घबरा रहे हैं। महात्माजी ने बहुत ही सौम्य एवं शान्त स्वर में कहा- मित्रों, क्या आप लोगों में कोई ऐसा है जिसका एक ही बेटा हो और वहां कुएं में गिर जाए तब भी आप विचलित नहीं होंगे। आलोचक वर्ग शान्त हो गया। महात्मा जी ने ज्ञान देते हुए कहा शास्त्रार्थ तो हर कोई कर लेगा लेकिन पीड़ित की सेवा नहीं। मेरा कर्म ही पीड़ितों की सेवा करना है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मंजूषा

भार्यावियोगः सुजनापवादः,
ऋणस्य शेषं कृपणस्य सेवा।
दारिद्र्यकाले प्रियदर्शनं च,
विनाग्निना पञ्च दहन्ति कायम्॥

नीतिशास्त्र/18

पत्नी से वियोग, सज्जनों के द्वारा निन्दा, ऋण का शेष, कंजूस की सेवा, दरिद्रता के समय प्रिय जनों का आगमन-ये पांच चीजें बिना आग के भी शरीर को जलाती है।

❋

पङ्कैर्विना सरो भाति, सदः खलजनैर्विना।
कटुवर्णविना काव्यं, मानसं विषयैर्विना॥

भामिनीविलास/1/113

कीचड़ से रहित तालाब शोभा पाता है, दुष्टों से हीन सभा अच्छी लगती है, कठोर वर्णों से रहित काव्य शोभा देता है और विषयों के चिन्तन से रहित ही मन शोभायमान होता है।

❋❋

अणुभ्यश्च महद्भ्यश्च शास्त्रेभ्यः कुशलो नरः।
सर्वतः सारमादद्यात् पुष्पेभ्य इव षटपद॥

जिस तरह मधुमक्खी छोटे-बड़े सब फूलों का रस संग्रह करती है, उसी तरह बुद्धिमान मनुष्य छोटे-बड़े सब शास्त्रों से उनका सार ग्रहण करते है।

काव्य सुधा

मुर्दा भारत को जिला जाएँगे मरते-मरते,
नाम जिंदों में लिखा जायँगे मरते-मरते।
हमको कमजोर समझ बैठे हमारे दुश्मन,
उनका अभिमान मिटा जाएँगे मरते-मरते।
जुल्म करती है बहुत हिंद पे आंतकशाही,
उनकी बदचाल मिटा जाएँगे मरते-मरते।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आवश्यकतायें, अपेक्षायें और अनुरोध

क्षय रोग से पीड़ित गरीब बीमारों की सेवा में कार्यरत इस संस्था की मदद आप निम्न प्रकार करने का कष्ट करें-

- रु. 2,00,000/-प्रदान कर एक आरक्षित आजीवन शैया आरक्षित करवा कर।
- रु. 15,000/- प्रदान कर एक शैया एक वर्ष के लिये आरक्षित करवा कर।

  आरक्षित शैयाओं पर आप द्वारा भेजे गये बीमारों को भर्ती कर निःशुल्क चिकित्सा, दवाईयाँ, भोजन-नाश्ता, दूध आदि सुविधायें मुफ्त उपलब्ध करवाई जायेंगी।
- सदन द्वारा संचालित गौशाला में औसतन 105 गोधन के दाना चारा हेतु सहायता प्रदान की जा सकती है।
- चिकित्सालय के बाह्य एवं आन्तरिक विभाग में आने वाले बीमारों को निःशुल्क दवा देने तथा उपकरण एवं यंत्र क्रय हेतु सहायता प्रदान की जा सकती है।
- चिकित्सालय में भर्ती बीमारों के लिए भोजन सामग्री, कम्बल, बेडशीट्स आदि के लिये कपड़े सामग्री तथा नकद सहायता भेजी जा सकती हैं।

उक्त सहयोग स्वरूप भेजी जाने वाली राशि नकद या ड्राफ्ट/चेक के रूप में हो सकती है जिसकी रसीद के साथ आवश्यकता होने पर आयकर की धारा 80 जी के अन्तर्गत मिलने वाली छूट का प्रमाण-पत्र भी दिया जा सकता है।

विशेष कार्यों के निमित सहायता हेतु भिजवाई गई राशि की आयकर की धारा 35 ए.सी. के अन्तर्गत संस्था को छूट भी मिली हुई है।

सांवरमल मोर

मंत्री

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनमोल मोती

1. अच्छे विचार रखना भीतरी सुन्दरता है।

   -स्वामी रामतीर्थ

2. विद्या अमूल्य और अनश्वर धन है। -ग्लेडस्टन

3. क्षमा ही शांति का सर्वश्रेष्ठ उपाय है। -महावीर

4. कुरीति के अधीन होना कायरता है, उसका विरोध करना पुरूषार्थ है। -महात्मा गांधी

5. दुर्बल चरित्र वाला व्यक्ति उस सरकंडे के समान होता है जो हवा के हर झौंके पर झुक जाता है।

6. परोपकार का फल अनायास मिलता है जैसे मेहन्दी पीसने वाले के हाथों पर रंग लग ही जाता है।

7. तृष्णा कभी समाप्त नहीं होती। वह ऐसी आग है जो बुझना नहीं जानती।

8. दुर्गुणों का विज्ञापन बिना अखबार में छपाये ही हो जाता है।

श्री कल्याण आरोग्य सदन बजाज ग्राम (सीकर) की ओर से विशाल प्रिंटर्स, सीकर से मुद्रित,
बजाज ग्राम (सीकर) से प्रकाशित -संपादक डॉ. के सी. शर्मा, ज्योति नगर, सीकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri